# स्वर प्रवाह

*चित्र सौजन्य : डॉ. नाथूलाल वर्मा*

**गायन,** वादन और नृत्य इन तीनों के समुचित समंजन को संगीत कहा जाता है। लेकिन यदि हम मात्र संगीत शब्द के तीनों अक्षरों को इधर-उधर करके देखें तो भी उसका सार्थक अर्थ परिलक्षित होता है। तीन अक्षरों की इस त्रिवेणी से यदि प्रथम अक्षर को हटा दें तो गीत बन जाता है। अंतिम अक्षर को हटा दें तो संगी यानी साथी बन जाता है और मध्य के अक्षर को हटा दें तो संत बन जाता है। इस दृष्टि से संगीत एक ऐसा साथी है जिसमें संतत्व है। एक दूसरे को जोड़ने की शुभता है। दिव्यता की अनुभूति, नौ रसों की प्रतीती, वात्सल्य का वेग, करुणा का कारुण्य, सम्बंधों की सदाशयता और सहजता का सारल्य है। संगीत से मन के उद्वेग तो शांत होते ही हैं, उसका परिष्कार होने से शुभता का प्रसार भी होता है।

संगीत ही है जिसकी समरसता से हम एकाकार हो जाते हैं। तंत्री वाद्यों के स्पंदन मात्र से हमारी हृदतंत्री झंकृत हो उठती है। गायन की गमक नाभिचक्र को भेदती ब्रह्मरंध्र में पहुंचकर अनहद में समा जाती है। नर्तन में तो तन, मन, आत्मा और भावाभिव्यक्ति सब कुछ एक लय की लड़ी में गुंथ जाते हैं। यह लय ऊर्ध्वगामी हो चेतना के चैतन्य को जाग्रत करने में स्फुरण का काम करती है और हम आनन्द के सागर में हिलोरें लेने लगते हैं।

संगीत सर्वत्र व्याप्त है। सम्पूर्ण जीव-जगत इससे आह्लादित रहता है। प्रकृति का अपना संगीत है। फूल का खिलना, विटप-वल्लरियों का झूमना, तितलियों का उड़ना, भ्रमरों का गुंजन, कोयल का कूकना, मयूर का नाचना, धूप का खिलना, बादल का गर्जना, दामिनी का दमकना, लहरों का उठ-उठ कर गिरना और तटबंध से टकराकर बिखर जाना, यह सब प्रकृति का ही तो संगीत है। जिस प्रकार प्रकृति का संगीत है उसी प्रकार जीवन का भी संगीत है। जीवन का यह संगीत सुरमयी बना रहता है तो सब कुछ संतुलित बना रहता है।

संगीत की अपनी सकारात्मक शक्ति होती है। यह मानव को मानव से जोड़ने का कार्य करती है। इसका उदाहरण सामूहिक प्रार्थना सभाओं, सामूहिक संकीर्तन और मंदिरों में समवेत स्वरों से गाये जाने वाले भक्तिपदों के अवसर पर देखा जा सकता है। संगीत में बहुत कुछ ऐसी संभावनाएं हैं जो हमें शांति, अहिंसा और सद्भाव के मार्ग की ओर अग्रसर कर सकती हैं। संगीत से सद्भाव और सदाशयता की भावना जाग्रत होती है जो हमें सर्वे भवन्तु सुखिनः के राजमार्ग पर ले जाती है। स्वाधीनता से पूर्व गांधी से जब पूछा गया कि आप स्कूल के स्तर पर किस विषय को अनिवार्य रूप से सब छात्रों को पढ़ाना निर्धारित करना चाहेंगे तो उनका उत्तर था- संगीत। स्कूली स्तर पर संगीत को अनिवार्य विषय बनाने की दिशा में निश्चय ही चिंतन-मनन करना चाहिए ताकि बच्चों में प्रारंभ से ही सकारात्मक ऊर्जा से हिंसात्मक वृत्ति का निषेध हो सके।